International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 511-512

महाकाव्य 'साकेत' में 'राम' का स्वरूप

डॉ. निखिल उपाध्याय
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

लोकनायक और लोककथायें साहित्य के अक्षय स्रोत होते हैं। इनमें साहित्य के विकास की अनंत सम्भावनायें सदैव ही बनती रहती हैं। श्री राम के लोक नायकत्व के आधार पर अस्तित्व में आयी रामकथा सम्पूर्ण विश्व के साहित्य जगत के लिए एक ऐसा ही अक्षय स्रोत है। भारतवर्ष की ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व की विभिन्न भाषाओं के साहित्य में रामकथा को विभिन्न रूपों में ग्रहण किया गया है। महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित 'रामायण' ग्रन्थ रामकथा का सर्वाधिक सनातन उपजीव्य ग्रन्थ माना जाता है। न जाने कितने कवियों ने रामकथा के इस आन्तरिक वैशिष्टय के माध्यम से ख्याति अर्जित की है। राम काव्य अपने उद्भव काल से ही ''हरि अनंत हरि कथा अनंता'' के अनुसार नवीन दृष्टि के साथ एक लम्बी विकास यात्रा तय कर चुका है। हिन्दी साहित्य में भी रामकाव्य परम्परा अत्यन्त समद्ध रूप में दिखायी देती है। यदि हम हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल पर दृष्टिपात करें तो यह कहने में तनिक भी संकोच नहीं होता है कि आधुनिक काल के कवियों ने भी राम कथा को आधार बनाकर अपनी सर्जनात्मकता को प्रदर्शित किया है। परिवर्तन तो प्रकृति का शाश्वत नियम है और इस नियम का दूसरा पक्ष यह है कि प्रत्येक क्षण के परिवर्तन के बाद अगले क्षण में नवीनता का समावेश होता है। रामकथा भी इस शाश्वत नियम से परे नहीं है। तात्पर्य यह है कि आधुनिक काल में जो रामकथाश्रित काव्य लिखे गये वो भले ही मूलरूप से मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्री राम की कथा पर आधारित थे, परन्तु उन काव्यों में वर्णित श्रीराम का स्वरूप भिन्न भिन्न था।

हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल के द्विवेदीयुगीन पुरोधा कवि मैथिलीशरण गुप्त जी द्वारा रचित महाकाव्य 'साकेत' आधुनिक काल की राम काव्य परम्परा में अनूठा स्थान रखता है। यह गुप्त जी का प्रतिनिधि काव्य–ग्रन्थ है। गुप्त जी ने 1916–17ई0 में महाकाव्य साकेत का लेखन प्रारम्भ किया और इसी के माध्यम से इनकी लोकप्रियता चरम पर पहुँच गयी। साकेत पुरानी रामकथा को नवीन दृष्टि देता है। जिस तरह तुलसी साहित्य में 'रामचरितमानस' का स्थान है वहीं स्थान गुप्त साहित्य में 'साकेत' को प्राप्त होता है। साकेत में वर्णित 'राम का स्वरूप' और 'उर्मिला का विरह गुप्त जी की सर्वोत्तम कल्पना है। शायद यही कारण है कि कवि ने स्वयं साकेत के निवेदन में कहा है–''मैं चाहता था कि मेरे साहित्यिक जीवन के साथ ही साकेत की समाप्ति हो।''[1]

वस्तुतः राम को अवतार मानकर, परब्रह्म का स्वरूप मानकर, स्वरूप निर्धारण सम्बन्धी कार्य का समर्थन करना आधुनिक युग के कवियों के लिये हैत्वान्यक कार्य नहीं रहा हैं। आधुनिक युग जो कि विज्ञान का युग है, में राम के स्वरूप के सम्बन्ध में नवीन विचार तथा मानवीकरण की प्रक्रिया स्वाभाविक है। गुप्त जी ने साकेत में वैष्णव भावना को ही दिखाया है, परन्तु वह भावना युगानुकूलता से पोषित नज़र आती है। मर्यादा पुरूषोत्तम ही गुप्त जी के आराध्य रहे हैं, इस बात का जिक्र स्वयं गुप्त जी ने शम्भूनाथ पाण्डेय जी की पत्रिका में दिये साक्षात्कार में किया था–''अपने विषय में स्वयं क्या कहूँ ? इष्ट देव के विषय में कुछ लिखना था, साकेत ही लिख गया।'' यद्यपि अपने युग के अनुरूप श्रीराम को गुप्त जी मानवीय आदर्शो के प्रतीक के रूप में ही प्रस्तुत करते हैं परन्तु उनके मन में स्थित श्रीराम अनुभूति श्रवण हैं। गुप्त जी की वैष्णव भावना ने श्री राम के स्वरूप को नवीनता देने के लिए परम्परागत सैद्धान्तिक चिन्तन धारा को अपनाया है। महाकाव्य के प्रथम सर्ग के इन पंक्तियों में कवि ने श्रीराम सम्बन्धी अपने विचार को तुलसी की वैचारिक पीढ़िका, दार्शनिक परिवेश के समान ही प्रस्तुत किया है–

''हो गया निर्गुण सगुण साकार है,
ले लिया अखिलेश ने अवतार है।''[2]

श्रीराम के स्वरूप निर्धारण में गुप्त जी ने प्रारम्भ से ही नितान्त नवीन दृष्टिकोण अपनाया है, जो इन पंक्तियों में द्रष्टव्य है–

''किसलिए यह खेल प्रभु ने है किया ?
मनुष्य बनकर मानवी का पय पिया है।
भक्त वत्सलता इसी का नाम है,
और वह लोकेश लीला धाम है।''[3]

श्री राम के प्रति गुप्त जी के मन में जो भावना है उसमें वह ईश्वर के अवतार तो हैं परन्तु ईश्वर नहीं है। कवि का अटल विश्वास है कि इस राम कथा के कारण ही वह ऐसी क्षमता प्राप्त कर सका है जिससे उसके अन्दर सर्जनात्मकता उत्पन्न हो सकी है–

''राम तुम्हारा वृत्त स्वयं ही काव्य है
कोई कवि बन जाये सहज सम्भाव्य है।''[4]

गुप्त जी के श्रीराम कभी–कभी बौद्धिकता के स्तर पर मानव प्रतीत होते है। डा0 कमलाकान्त पाठक के अनुसार कवि ने ''विश्वास के बल पर उन्हें अवतार माना पर बुद्धिवाद के प्रभाव के कारण उन्हें मानव ही रखा।''[5] राम का आदर्श जीवन की यथार्थताओं से संधि करने वाले एक मानव का ही आदर्श प्रतीत होता है। उनका जीवनादर्श कवि की विशिष्ट प्रतिभा की मौलिक उद्भावना है। डॉ0 रामस्वरुप चतुर्वेदी यह मानते हैं कि गुप्त जी के लिए साकेत के राम मानव और ईश्वर दोनों एक साथ हैं। परम तत्व के साथ सम्बन्ध का यह परिवर्ती रूप है।[6]

द्वितीय सर्ग में राम के हृदय संग्राम का जो सजीव चित्रण महाकाव्य में वर्णित हैं, वह एक आदर्शनिष्ठ व्यक्तित्व की ओर संकेत करता है। महाराज दशरथ के साम्राज्य का अधिकार राम को भार सा लगता है। वो सीता से कहते हैं कि राज्य प्रजा की धरोहर है।

''राज्य है प्रिये भोग या भार ?
बड़े के लिए बड़ा ही दण्ड!
प्रजा की थाती रहे अखण्ड।''

राम का आदर्श युक्त व्यवहार उनमें शोभित मानवादर्श का प्रतीक ही है। राम में त्याग की जो प्रवृत्ति दिखायी देती है वह कर्त्तव्यानुनिष्ठत है। राज्यत्याग, सम्पूर्ण संसार को अपना राज्य मानने की मनोभावना वास्तव में राम के आदर्श रूप की प्रतिष्ठा करती है। मर्यादा के पोषक श्रीराम के स्वरूप में गुप्त जी ने मानवीय वृत्तियों को कुशलतापूर्वक उकेरा है।

''कहा प्रभु ने पिता! हा! मोह इतना!
विचारो किन्तु होगा द्रोह कितना।''[7]

गुप्त जी के राम अपने कर्त्तव्य के प्रति दृढ़ दिखाई देते हैं इसी दृढ़ता में वह माता कौशल्या से बताते हैं कि मेरे लिये तो स्वार्थ ही परमार्थ बन गया है। अपने मानवत्व में श्री राम कभी–कभी ईश्वरत्व की भी झलक दिखाते हैं, परन्तु इससे श्रीराम का मानवत्व और विशिष्ठ होता नज़र आता है। सुमित्रा का यह कथन इस बात की पुष्टि करता है–

''तुमने मानव जन्म लिया,
धरणी तल को धन्य किया।''[8]

श्रीराम के प्रति साकेतवासियों का उमड़ता स्नेह और ममता भी राम को अपने कर्त्तव्यपथ से विचलित नहीं कर सका है। गुप्त जी ने श्री राम के अन्दर सागर सी दृढ़ता दिखाकर उपमा के क्षेत्र में एक नया कीर्तिमान भी स्थापित किया है। गुप्त जी ने स्पष्ट कहा है सागर अपनी मर्यादा का उल्लंघन नहीं करता चाहें वर्षा हो या ग्रीष्म–

''वर्षा हो या ग्रीष्म, सिन्धु रहता वही
मर्यादा की सदा साक्षिणी है मही।''[9]

साकेत में जन्म भूमि के प्रति श्रद्धा का भाव श्रीराम में निहित मानव सदृश विचारों–विकारों का निर्देशन ही है। यही नहीं जन्म भूमि को ''मनुष्यत्व मनुजात धर्म की धात्रि तू'' कहकर राम ने अपने हृदयगत विचारों को सप्राणता भी प्रदान की है। समष्टि के लिए व्यष्टि का बलिदान राम को सर्वश्रेष्ठ जंचता है–

''निज हेतु बरसता नहीं व्योम से पानी,
हम हो समष्टि के लिए व्यष्टि बलिदानी।''

आठवें सर्ग मं कवि ने श्री राम के माध्यम से कुछ उच्च विचारों को पाठकों तक पहुँचाने की चेष्टा की है। श्री राम कहते हैं कि परमार्थ से बड़ा कोई लाभ नहीं है। जितने प्रवाह हैं वे बहे, अवश्य बहे परन्तु उन्हें अपनी मर्यादा में ही रहना चाहिये। इस भूमि को औरो का भी भार झेलना तथा पालन करना है। जनपद के बन्धन समष्टि की मुक्ति के लिये है।

साकेत के श्रीराम कहीं–कहीं दर्शन से भी प्रभावित दिखते हैं। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि यह दार्शनिकता वास्तव में श्री राम में नहीं, कवि की लेखनी में है। कवि श्रीराम से ही संसार के 'कारण सम्बन्धी' विचार भी प्रस्तुत करवाता है–

''है और रहेगें नित्य विविध वृत्रस्ते
हमको लेकर ही अखिल सृष्टि की क्रीड़ा
आनंदमयी नित नई प्रसव की पीड़ा।''

साकेत में श्रीराम और सीता को ब्रह्म और माया माना गया है, साथ ही साथ इस बात पर भी जोर दिया गया है कि संसार का क्रम ब्रह्म और माया से ही चल रहा है। अंतिम सर्ग में श्रीराम अपने उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि जो दुखी हैं, मैं उनके मोचन के लिये आया हूँ। उनके अनुसार प्रत्येक मनुष्य को अपनी रक्षा का अधिकार प्राप्त होना चाहिये, परन्तु पूरे समाज का भार शासन को ही वहन करना चाहिए। वो कहते हैं कि मैं स्वयं सभी के दुःख झेलकर दूसरों को सुखी बनाने के लिये तथा लीला करने के लिये यहाँ आया हूँ। मैं स्वयं राज्य का भोग करने के लिए नहीं, दूसरों को राज्य करने के योग्य बनाने आया हूँ। राम की यह घोषणा उनकी स्थिति को और भी अधिक स्पष्ट करती है–

''भव में नव वैभव व्याप्त कराने आया,
नर को ईश्वरता प्राप्त कराने आया,
संदेश यहाँ मैं नहीं स्वर्ग का लाया
इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया।''[10]

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि गुप्त जी भिन्न–भिन्न स्वरूपों से प्रभावित हैं। गुप्त जी के आराध्य तो त्रेतायुगीन श्री राम ही हैं परन्तु वे अपने हृदय के मूल स्थित परब्रह्म के अवतार श्री राम के स्वरूप को भी मान्यता देतें हैं। साकेत में गुप्त जी श्रीराम को अवतार के रूप में कम, मानव और युग पुरूष के रूप में अधिक स्वीकार करते हैं। महाकाव्य साकेत हर स्तर पर मानवतावादी दृष्टिकोण से परिपूर्ण नजर आता है।

सन्दर्भ

1. साकेत (निवेदन), मैथिलीशरण गुप्त पृष्ठ-3
2. साकेत (प्रथम सर्ग)
3. साकेत (प्रथम सर्ग)
4. साकेत (प्रथम सर्ग)
5. मैथिलीशरण गुप्त : व्यक्ति और काव्य, डॉ0 कमलाकान्त पाठक, पृष्ठ–459
6. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, राम स्वरूप चतुर्वेदी, पृष्ठ–97
7. साकेत (तृतीय सर्ग)
8. साकेत (चतुर्थ सर्ग)
9. साकेत (पंचम सर्ग)
10. साकेत (अष्टम सर्ग)